प्लवङ्गदूत में प्रकृति–चित्रण

नीलू पाण्डेय*

प्रकृति चित्रण के माध्यम से कवि को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है। वह प्रकृति को लक्ष्य करके जन सामान्य को कुछ उपदेश भी देता है, इस दृष्टि से भी साहित्य में प्रकृति–चित्रण उपादेय हे। कालिदास की प्रकृति मानव–जीवन से मिश्रित है। प्रकृति को मानव जीवन से पृथक नहीं देखा जा सकता। वनेश्वर पाठक के काव्य में प्रकृति उस पराकाष्ठा पर नहीं पहुँच पायी है। इन्होनें अवसर पर प्रकृति के किसी भी उपादान पर दृष्टिपात मात्र कर लिया है। इस दृष्टि से वनेश्वर पाठक की प्रकृति के प्रति भावना बहुत संकुचित है। कवि पाठक ने प्रकृति के प्रति अपना धार्मिक अनुराग ही व्यक्त किया है।

कवि वनेश्वर पाठक भारतीय धर्म–संस्कृति के अनुयायी है, देश भक्त है और प्रकृति प्रेमी है। इनके द्वारा प्रणीत इस आलोच्य काव्य प्लवङ्गदूत में प्रकृति के कतिपय मनोहर चित्र हैं, जिन्हें देखने से कवि की भावनाओं एवं उनके वर्णन–कौशल का पता चलता है। यदि कालिदास का दूत मेघ प्रकृति–जगत् से है तो इनका काव्य दूत भी वन्य प्राणि वानर है।

कवि पाठक की दृष्टि में प्रकृति मानव की सहायिका एवं सहचरी होने के कारण सदैव आदरणीय है। इन्होंने गंगा–यमुना जैसी नदियों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। कवि ने प्लवङ्ग से गंगा को नमन करने का स्पष्ट निर्देश दिया है–

कृच्छा यासाकलिततपसाऽऽनीतवान् ब्रह्मलोकात्
पूण्यामेतां सगरनृपतेर्वंशजो भूमिपालः।
आदावेनां प्रणम जगतां पावनीं भक्तिनम्रः
शक्राशागां विबुधनिनुतां किल्विषाव्रात्हन्त्रीम्।।

यह गंगा सामान्य नदी नहीं, अपितु यह स्वर्ग से धरातल पर लायी गयी दिव्य नदी है। घोर तपस्या के परिणामस्वरूप यह धरातल पर लायी जा सकी है। यह परम पावनी है। पापों के समूह का नाश करने वाली है। मनुष्य का कल्याण करने वाली है। अतएव यह अहर्निश नमनीय है।

सर्वविदित है कि प्रयाग में गंगा, यमुना और अन्तःसलिला सरस्वती का संगम है। तीनों पवित्र नदियों का संगम स्थल तो स्वयं पवित्र हो जाएगा। इसके दर्शन मात्र से ही मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

पश्चाद् गच्छेः कलिमलहरं तीर्थराजं प्रयागम्।

गंगा की तरह यमुना नदी भी कल्याणकारिणी है, उपकारिणी है। यह भी पूज्या है, प्रणम्य है, श्रद्धेया है। कवि ने प्लवङ्ग को कहा है कि रेलगाड़ी से जाते हुए तुम्हें यमुना नदी दिखाई देगी। उसे प्रणाम करना और उसमें ताम्बा का एक सिक्का अवश्य डालना।

***शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, म0वि0वि0, बोधगया, गया।**

मध्ये सेतोर्व्रजति भवतो घूमयानेऽल्पवेगे
भवत्या नत्वा दिनकर सुतां ताम्रखण्डं क्षिप त्वम्।

नदी, पर्वत, वृक्ष, तीर्थस्थल के प्रति कवि की अपार श्रद्धा है। ये प्राकृतिक उपादान मानव के सहायक है। मानव जीवन के विकास एवं समृद्धि में इन तत्वों की महती भूमिका है। अतएव ये समग्र तत्व सदा सम्माननीय है, श्रद्धेय एवं पूजनीय है। गुरुनानक देव जी के जन्म–स्थान होने से 'करतारपुर' पवित्र तीर्थ स्थान है। उस तीर्थ पर प्लवङ्ग को अवश्य जाना चाहिए। मार्ग में प्राप्त श्रेय की उपेक्षा कदापि नहीं करनी चाहिए।

श्रेयः प्राप्तं पथि समतिनोपेक्षितुं नैव योग्यम्।।

प्रकृति के यथार्थ चित्रण में भी कवि निपुण है। यद्यपि मेघदूत की तरह प्राकृतिक चित्र नहीं उकेरे गये है, तथापि झलक तो अवश्य देखी जा सकती है–

सैषा भूमिर्निविडविपिना पर्वतीयप्रपाता–
पण्यस्थानं खदिरजतुनो रीतिकांस्नादिकानाम्।

जैसे महाकवि कालिदास की प्रकृति चेतन है, वह हँसती है, मुस्कुराती है, सुख में प्रसन्न और दुःख में अश्रुपात करती है, वैसे ही कवि पाठक की प्रकृति भी चेतन है। यह भी सुख–दुःख की अनुभूति करती है। आलोच्य काव्य में एक स्थान पर कवि की यह भावना व्यक्त हुई है–

उतीर्णः सन् विबुधसरितं सेतनाऽऽपीड्यमाना
मूर्ता साधो! सगरनृपतेर्वंशकीर्तेः पताकाम्।

जिस गंगा को राजा भगीरथ ने घोर तपस्या से प्रसन्न करके धरातल पर लाया, उसी के तट पर काशी नदी बसी है। काशी के समीप ही गंगा नदी पर पुल है, जिसे पार करके मुगलसराय जाया जाता है।

गंगा उन्मुक्त प्रवाहित होने वाली नदी है। इसमें बने स्तंभों से गंगा की धारा टकराती है। इससे गंगा को कष्ट होता है। इस भाव की अभिव्यक्ति उपर्युक्त पद्य में मात्र एक पद से होता है–'पीड्यमानाम्'। यहाँ गंगा की आंगिक सुकुमारता, संवेदनशीलता एवं चेतनता व्यंजित हुई है।

उपर्युक्त उद्धरणों से पता चलता है कि कवि वनेश्वर पाठक प्रकृति के प्रति श्रद्धावान है। इसीलिए तो इन्हें प्रकृति का यथार्थ रूप कम दिखलायी दिया है, इन्होंने उसकी पूजनीयता या नमनीयता ही देखी है। प्रकृति के प्रति इनकी धार्मिक भावना अधिक उदार है। वैसे प्रकृति–चित्रण में इन्हें गति प्राप्त है।

संदर्भ सूची–

- कृच्छायासाकलित –प्लवङ्.गदूत– 34 पूर्व निःश्वास
- पश्चाद्गच्छैः –प्लवङ्.गदूत– 45 पूर्व निःश्वास
- मध्ये सेतोव्रजाति –प्लवङ्.गदूत– 46 पूर्व निःश्वास
- श्रेयः प्राप्तं– – – – –प्लवङ्.गदूत– 67 पूर्व निःश्वास
- सैषा भूमि– – – – –प्लवङ्.गदूत– 45 पूर्व निःश्वास
- उत्तीर्ण सन्– – – – –प्लवङ्.गदूत– 35 पूर्व निःश्वास